इन्क़िलाबी नज़र

आवाज़ ... आम आदमी की

लखनऊ, रविवार, 15 मार्च 2026

ब्रह्मज्ञानी को स्वर्ग तृण है,
शूर को जीवन तृण है, जिसने
इंद्रियों को वश में किया उसको
सभी तृण-तुल्य जान पड़ती है,
निस्पृह को जगत तृण है
-चाणक्य

वर्ष 18 अंक 191 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ- 12+4

तापमान - अधिकतम 34.4°C (+2.2) न्यूनतम 18.5°C (+3.5) सेंसेक्स 76,563.92 (-1470.50) निफ्टी 23,151.10 (-488.05) सोना 1,59,610 चांदी 2,75,000 मुद्रा - डालर 92.57 दिरहम 25.20 रियाल 24.68

डॉ. माइकल फ्रेडमैन ने महामारी से निपटने की तैयारी पर दिया जोर

व्याख्यान

⊙ एरा यूनिवर्सिटी में वैश्विक स्वास्थ्य पर हुआ कार्यक्रम

लखनऊ (सं)। एरा यूनिवर्सिटी में शनिवार को वैश्विक स्वास्थ्य चुनौतियों पर एक विशेष शैक्षणिक सत्र का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महामारी विशेषज्ञ डॉ. माइकल फ्रेडमैन ने शिक्षकों और स्नातकोत्तर छात्रों के साथ संवाद किया। उन्होंने भविष्य की महामारियों से निपटने की तैयारी, जैव-सुरक्षा और पर्यावरणीय खतरों जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की।

डॉ. फ्रेडमैन पूर्व में सेंटर्स फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) में मुख्य चिकित्सा अधिकारी और कंट्रोल डायरेक्टर रह चुके हैं। वर्तमान में वे नेशनल युनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर से जुड़े हुए हैं और विश्व बैंक तथा नेशनल पब्लिक हेल्थ सर्विस के साथ भी कार्य कर चुके हैं। अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि भविष्य में नई महामारी का आना केवल संभावना नहीं, बल्कि लगभग निश्चित घटना है, इसलिए स्वास्थ्य तंत्र को पहले से ही तैयार रहना होगा। तकनीकी सत्र के दौरान उन्होंने 'वन हेल्थ' दृष्टिकोण पर जोर दिया, जिसके तहत मानव, पशु और पर्यावरणीय स्वास्थ्य से जुड़े आंकड़ों को एकीकृत कर बीमारियों के संभावित प्रसार का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि महामारी की तैयारी के लिए केवल अस्पताल और दवाएं ही पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि ऐसी सक्रिय विनिर्माण सुविधाओं की जरूरत है जो सामान्य समय में भी काम करती रहें और संकट के समय टीके व जांच उपकरणों का तेजी से उत्पादन कर सकें। उन्होंने डेटा और शोध की भूमिका को भी महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि स्थानीय स्तर पर महामारी विज्ञान मॉडल विकसित करने में शोधार्थियों की अहम भूमिका हो सकती है, जिससे क्षेत्रीय स्तर पर फैलने वाली बीमारियों को वैश्विक संकट बनने से रोका जा सके। सत्र के दौरान उन्होंने सीसा विषाक्तता जैसे पर्यावरणीय खतरे पर भी ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने बताया कि मिलावटी मसालों, कुछ पारंपरिक औषधियों, पुराने भवनों में प्रयुक्त सीसा युक्त पेंट और अनियंत्रित बैटरी रीसाइक्लिंग जैसी गतिविधियों के कारण लोगों में सीसे के संपर्क का खतरा बढ़ रहा है। इससे बच्चों में तंत्रिका संबंधी समस्याएं और वयस्कों में हृदय रोग होने की आशंका रहती है। कार्यक्रम के अंत में प्रश्न-उत्तर सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें छात्रों ने वैश्विक स्वास्थ्य से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। एरा यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. अब्बास अली महदी ने डॉ. फ्रेडमैन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके अनुभव और विचार विश्वविद्यालय के शोध व चिकित्सा शिक्षा के लिए प्रेरणादायक हैं। इस अवसर पर न्यूरोलॉजी विभाग के प्रमुख प्रो. आर.के. गर्ग, कम्युनिटी मेडिसिन विभाग की प्रमुख प्रो. रूबी खातून, बायोटेक्नोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. तबरेज जफर सहित कई संकाय सदस्य और शोधार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान डॉ. फ्रेडमैन ने विश्वविद्यालय की प्रयोगशालाओं और स्वास्थ्य सुविधाओं का भी दौरा किया और वहां हो रहे शोध कार्यों की सराहना की।